हिन्दी पाक्षिक समाचार पत्र

त्रिकाल दृष्टि

सच का दर्पण

आर.एन.आई. नं.- MPHIN/2015/66655

वर्ष-1 अंक-11, भोपाल, 1 से 15 अप्रैल 2016 पृष्ठ- 8 मूल्य : 2 रूपये www.trikaldrishti.com

महाकाल की नगरी में सिंहस्थ की हलचल

सिंहस्थ भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्म का दर्शन दुनिया को करवायेगा

तृतीय पेशवाई में शामिल हुए मुख्यमंत्री श्री चौहान

भोपाल। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने उज्जैन में श्री निरंजनी अखाड़ा पंचायती की भव्य पेशवाई में सपत्नीक शामिल होकर संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया। उनके साथ जिला प्रभारी मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह, विधायक डॉ.मोहन यादव, श्री शिवनारायण जागीरदार सहित अन्य जन-प्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती साधना सिंह के साथ चार धाम मंदिर पहुँचकर अखाड़ा परिषद अध्यक्ष श्री नरेन्द्रगिरिजी, महामण्डलेश्वर श्री पुण्यानंदगिरिजी एवं श्री शांतिस्वरूपानंद तथा अन्य उपस्थित महामण्डलेश्वर, श्री महन्त एवं विभिन्न अखाड़ों के प्रतिनिधियों से भेंटकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि भगवान श्री महाकाल एवं साधु-संतों के आशीर्वाद से महाकुंभ सफल होगा। सिंहस्थ के माध्यम से भारतीय संस्कृति और आध्यात्म को पूरी दुनिया देखेगी। इस महापर्व से हम भारतीय संस्कृति, इतिहास एवं सनातन परम्परा से दुनिया को रू-ब-रू करवायेंगे। श्री चौहान ने सिंहस्थ की सफलता के लिये सभी साधु-संतों से आशीर्वाद की कामना की। महामण्डलेश्वर श्री शांतिस्वरूपानंद जी ने कहा कि मुख्यमंत्री ने सिंहस्थ में जो कार्य करवाये हैं वह अदभुत और अविस्मणीय है। उन्होंने इसके लिये मुख्यमंत्री श्री चौहान को धन्यवाद भी दिया। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष श्री नरेन्द्रगिरिजी ने पेशवाई का इतिहास, परम्परा एवं महत्व पर प्रकाश डाला।

निरंजनी अखाड़ा की पेशवाई : श्री निरंजनी आखाड़ा पंचायती की चार धाम से प्रारम्भ हुई भव्य पेशवाई में सबसे आगे ध्वजा लिये श्री महन्त चल रहे थे। उनके पीछे चाँदी की पालकी में अखाड़े के इष्टदेव विराजित थे। उसके बाद उत्साहपूर्वक अस्त्र-शस्त्र का करतब दिखाते हुए नागा सन्यासी चल रहे थे। पेशवाई में 50 सफेद घोड़ों पर सवार नागा साधु सभी के आकर्षण का केन्द्र रहे। उनके पीछे बेंड बाजों के साथ 50 रथ पर सवार महामण्डलेश्वर श्री महन्त चल रहे थे। पेशवाई में करीब 25 बेंड, धार्मिक भजनों की स्वर-लहरियाँ बिखेर रहे थे। लोक नृत्य करते हुए आदिवासी नर्तक भी चल रहे थे। पेशवाई के दौरान वायुयान द्वारा पुष्प वर्षा भी की गई।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने भी चार धाम मंदिर से हरिसिद्ध मार्ग तक पेशवाई में भाग लिया। रथ पर क्रमशः महामण्डलेश्वर श्री पुण्यानंदजी, महामण्डलेश्वर बालकानंदजी, श्री सोमेश्वरानंद जी, जगदीशानंदजी, शांतिस्वरूपानंद गिरि, महामण्डलेश्वर गुरू माँ आनंदमयी पुरी, सोमेश्वरानंद सरस्वती, स्वामी महेश्वरानंद गिरि, श्री हरिओमइ गिरि, स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती, स्वामी प्रेमानंदपुरी जी, श्री ललितानंद गिरि, श्री अनंतानंद गिरि, श्री महन्त नित्यानंद गिरि, स्वामी विष्णु योगानंदजी सहित 50 से अधिक महामण्डलेश्वर और श्री महन्त पेशवाई के साथ रथ पर सवार होकर श्रद्धालुओं को आशीर्वाद स्वरूप उपहार भेंट कर रहे थे। मार्ग के दोनों ओर लाखों श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर पेशवाई में शामिल महामण्डलेश्वर, श्री महन्तों और नागा सन्यासियों पर पुष्प वर्षा आशीर्वाद प्राप्त किया।

सिंहस्थ में उज्जैन से ओंकारेश्वर, महेश्वर तक तैनात रहेंगे 500 डॉक्टर

इंदौर। सिंहस्थ मेले के मद्देनजर उज्जैन से ओंकारेश्वर और महेश्वर तक में लगभग 500 डॉक्टर तैनात किए जा रहे हैं। उज्जैन में 400 जबकि ओंकारेश्वर में 55 और महेश्वर में 48 डॉक्टरों की ड्यूटी लगाई जा रही है।

उज्जैन में डॉक्टरों की तैनाती भोपाल मुख्यालय से हो रही है, जबकि ओंकारेश्वर और महेश्वर में इंदौर से स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त संचालक की ओर से। ओंकारेश्वर और महेश्वर में स्टाफ नर्सेस, फार्मासिस्ट और लैब टेक्नीशियन का भी 100 का स्टाफ रहेगा। ओंकारेश्वर में नहाने के दौरान डूबने के केस भी अधिक आ सकते हैं। डॉक्टरों का मानना है कि गर्मी होने से सर्पदंश के केस बढ़ने की भी आशंका है। ऐसे में यहां के अस्पतालों में इन दोनों मामलों से जुड़ी दवाओं और मेडिकल सुविधाओं के खास इंतजाम रखे जाएंगे।

ओंकारेश्वर और महेश्वर में दो-दो एम्बुलेंस तैनात कर दी गई हैं। एक-एक एम्बुलेंस और दी जाएगी। उज्जैन सिंहस्थ का बढ़ा दबाव इंदौर पर रहेगा। इस कारण यहां एमवाय अस्पताल में इलाज की सारी सुविधाएं चाक-चौबंद रखी जाएंगी। यहां के ब्लड बैंक में हर ग्रुप का ब्लड 24 घंटे उपलब्ध रहेगा।

आईसीयू से वेंटिलेटर के इंतजाम भी बेहतर रहेंगे। संयुक्त संचालक लोक स्वास्थ्य डॉ. शरद पंडित ने कहा कि रास्ते में हेल्थ पोस्ट भी बनाई जाएंगी। इसमें हर समय डॉक्टर और दवाओं का इंतजाम रहेगा।

30 करोड़ के होर्डिंग्स से पटी कुंभ नगरी उज्जैन

उज्जैन। सिंहस्थ 2016 के लिए खूब प्रचार-प्रसार हो रहा है। इसमें न तो सरकार पीछे है न ही बाबा और संतों के अनुयायी और भक्त। अकेले मेला क्षेत्र में 12 हजार विद्युत पोलों पर मप्र सरकार के छोटे-बड़े 10 हजार होर्डिंग्स लगे हैं। इसके दीगर शहर के पॉश से लेकर सामान्य इलाके तक में बाबाओं और संतों के होर्डिंग्स दिखाई दे रहे हैं। होर्डिंग्स कारोबारियों की मानें तो इस बार सिंहस्थ में 25 से लेकर 30 करोड़ रुपए तक का व्यापार होगा। होर्डिंग्स, फ्लेक्स, बैनर का काम इतना है कि ऑर्डर पूरे नहीं हो पा रहे। इसमें स्थानीय सहित प्रदेश और दूसरे राज्यों के व्यापारी भी लगे हुए हैं।

इनके होर्डिंग्स सबसे ज्यादा मेला क्षेत्र में स्वामी नित्यानंद के छोटे-बड़े 1200 से अधिक होर्डिंग्स और बैनर लगे हैं। अनुयायी स्वामी पूजानंद ने बताया कि पोल के ऊपर एक हजार एवं बड़े प्रारूप में 200 बोर्ड लगाएं गए हैं। पंच दशनाम जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंदगिरी के प्रभु प्रेमी संघ द्वारा शहर में सैकड़ों छोटे-बड़े होर्डिंग्स लगाए गए हैं। मेला क्षेत्र में लगे बिजली के खंभों पर चार से लेकर छह-छह होर्डिंग्स लगे हुए हैं। यह भी पीछे नहीं मेला एवं शहरी क्षेत्र में गृहस्थ संत देव प्रभाकर (दद्दाजी), बालक योगेश्वर दास, अखाड़ा परिषद अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरी, स्वामी सत्यमित्रानंद, महामंडलेश्वर कैलाशानंद ब्रह्मचारी,महायोगी पायलट बाबा, श्री महंत हरि गिरी महाराज, कथाकार रमेश भाई ओझा, परमार्थ निकेतन के चिदानंद मुनि, महामंडलेश्वर अवधूत अरूण गिरी, योगमाता शैलजा मां, नारायण सेवा संस्थान, असंग देव, मलूक दास सहित कई संतों के होर्डिंग्स बैनर सड़कों, गलियों और कॉलोनियों में दिखाई दे रहे हैं।

तेरह अखाड़ों में तीन अखाड़े वैष्णव मत के

उज्जैन। तेरह अखाड़ों में तीन अखाड़े वैष्णव मत के हैं। वैष्णव संतों और उनके खालसों की परंपरा एकदम अलग है। वैष्णवों को संगठित करने के लिए वृंदावन में संतों का एक विराट सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में बालानंद मठ के संस्थापक अनुभवानंद ने चारों संप्रदायों के संघों और मंडलों को पुर्नजीवित करते हुए उसका नाम अखाड़ा रख दिया। कालांतर में इन अखाड़ों के भीतर धर्म प्रचार के साथ-साथ युद्ध कला की शिक्षा दी जाने लगी। अखाड़े तीन तथा 18 अणियों में विभक्त होते हुए 675 खालसों में बंट गए। ईस्वी 1400 में बालगंगाचार्य महाराज ने अखाड़े की स्थापना की। अखाड़े की अणियां अखाड़े के अंदर श्री रामानंदीय निर्मोही, श्री रामानंदीय झाडिया निर्मोही, श्री रामानंदीय मालाधारी निर्मोही, श्री रामानंदीय महानिर्वाणी निर्मोही, श्री हरिव्यासी संतोषी निर्मोही, श्री राधावल्लभी निर्मोही, श्री रामनंदीय संतोषी निर्मोही, श्री हरिव्यासी महानिर्वाणी निर्मोही एवं दादू पंथी अणि शामिल हैं।

सिंहस्थ के लिए नर्मदा से शिप्रा नदी में छोड़ा 178 करोड़ रुपए का पानी

उज्जैन। मोक्षदायिनी शिप्रा को सदानीरा बनाने के लिए नर्मदा नदी का 2790 एमसीएफटी पानी शिप्रा में छोड़ा जा चुका है। इतना पानी कि अगर इसे सहेजा जाए तो शहर में 465 दिन रोज जलप्रदाय किया जा सकता है। नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण ने इस पानी की कीमत 22 रूपए 60 पैसे प्रति हजार लीटर के मान से 178 करोड़ रूपए आंकी है। इतिहास बताता है कि किसी भी महाकुंभ में किसी नदी का पानी लाने के लिए इतना खर्च नहीं किया गया। महाकुंभ सिंहस्थ का स्नान नर्मदा-शिप्रा के स्वच्छ जल में हो, इस मंशा से राज्य शासन ने 432 करोड़ रूपए खर्च कर नर्मदा-शिप्रा का संगम 6 फरवरी 2014 को कराया था। तब से लेकर अब तक नर्मदा का 2750 एमसीएफटी पानी शिप्रा में छोड़ा गया है। योजना के संचालन पर 50 करोड़ रूपए से ज्यादा खर्च भी किए जा चुके हैं।

जैसे-तैसे अपने परिवार का पेट पाल रहे ये लोग अभी तक सदमे में हैं।

राऊ विस्फोट में बस यही सवाल... अब घर कैसे चलेगा

इंदौर। राऊ की पटाखा फैक्टरी में घायल हुए मजदूरों को अपनी हालत की चिंता के साथ घर चलाने की चिंता भी सता रही है। जैसे-तैसे अपने परिवार का पेट पाल रहे ये लोग अभी तक सदमे में हैं। चार घायलों को एमवाय अस्पताल लाया गया। ये अपना नाम तक नहीं बता पा रहे थे। जैसे-तैसे उन्होंने घटनाक्रम बयां किया। फैक्टरी में रोजाना 20-25 लोग काम करते हैं लेकिन घटना के वक्त (सुबह करीब 9.30 बजे) 10-12 लोग ही अंदर थे। घायलों में दारासिंह और मथुराबाई भाई-बहन हैं, जबकि विक्रम और रानी पति-पत्नी। डॉ. अभय ब्राह्मणे ने बताया कि सभी लोग 30 प्रतिशत से ज्यादा जले होने के कारण गंभीर हैं और इनका इलाज जारी है। ये कितना खतरे में हैं, यह बाद में स्पष्ट होगा।

93 प्रतिशत तक जल गया शरीर

सबसे खराब हालत दारासिंह पिता केसरसिंह की है। डॉक्टरों के मुताबिक गर्दन, हाथ, पेट और चेहरे सहित 93 प्रतिशत शरीर जल चुका है। दारासिंह ने बमुश्किल अपना नाम बताया और कहा आग कैसे लगी, मुझे नहीं मालूम। मैं रोज की तरह फैक्टरी गया था, डिब्बियां भरने का काम चल रहा था और अचानक धमाका हो गया।

होश आया तो अस्पताल में थी

दिव्यांग मथुराबाई ने बताया कि घटना के वक्त मेरे पति भी वहीं थे, लेकिन अब वे मिल नहीं रहे। मैं छत पर बत्ती बना रही थी, धमाका सुना तो हाथों के बल जल्दी से सीढ़ियां उतरीं और बाहर आने की कोशिश की। गिरने और घबराहट के कारण मैं बेहोश हो गई और जब आंख खुली तो अस्पताल में थी।

अब जिंदगी कैसे चलेगी

50 फीसदी जले विक्रम पिता नंदराम (35) ने बताया कि मैं और मेरी पत्नी दोनों जल गए, अब जिंदगी कैसे चलेगी, समझ नहीं आ रहा। घटना के वक्त कितने लोग फैक्टरी में थे और कितने लोग जल गए, इसकी जानकारी नहीं है।

रोजाना सिर्फ 150 रुपए

डॉक्टरों के मुताबिक रानी 42 प्रतिशत जल गई है। रानी ने बताया कि वह बारूद की डिब्बियां भरती है जिससे सुतली बम और दूसरे पटाखे बनते हैं। एक हजार डिब्बियां भरने पर 50 रुपए मिलते हैं। रोज करीब तीन हजार डिब्बियां भरने पर 150 रुपए मिलते हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा, अब कैसे घर चलेगा।

डरे-सहमे बच्चे खाना तक नहीं खा पाए

मजदूरों की हालत देख हर शख्स सहम गया। बच्चे तो इतना डर गए कि वे न कुछ बोल पा रहे थे और न उनके आंसू थम रहे थे। विक्रम और रानी के बेटे रोहित (12) और विशाल (9) साथ में ही अस्पताल आए थे। दोपहर में दोनों बच्चे मां के बिस्तर के पास बैठे थे और उन्होंने रोते हुए बर्न यूनिट में बैठकर भोजन किया।

बैंगनी ड्रेस में मुस्तैदी से तैनात हैं मेला क्षेत्र में सफाईकर्मी

उज्जैन। 22 अप्रैल से 21 मई तक होने वाले सिंहस्थ में मेला क्षेत्र में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की योजना तैयार की गयी है। मेला क्षेत्र में बैंगनी कलर की ड्रेस में सफाईकर्मी नियमित रूप से सफाई कार्य को अंजाम दे रहे हैं। सिंहस्थ के दौरान शाही स्नान के दिनों में एक करोड़ श्रद्धालु प्रतिदिन तथा सामान्य दिनों में 20 से 25 लाख श्रद्धालु मेला क्षेत्र में रहेंगे। लगभग 1000 से 1200 मीट्रिक टन कचरा प्रति सामान्य दिनों में उठाया जायेगा। कचरे की यह मात्रा शाही स्नान के दिनों में लगभग दुगनी हो जायेगी। उज्जैन नगर निगम ने शाही स्नान के दिनों में प्रतिदिन 2500 मीट्रिक टन कचरा उठाने की योजना बनायी है। इसी दौरान उज्जैन के शहरी क्षेत्र में भी प्रतिदिन 300 मीट्रिक टन कचरा उठाया जायेगा।

कचरा निपटान की दृष्टि से मेला क्षेत्र को पैकेज-ए तथा पैकेज-बी में बाँटा गया है। पैकेज-ए में दत्त अखाड़ा और महाकाल जोन शामिल हैं। कांट्रेक्टर द्वारा पैकेज-ए के क्षेत्र में 3000 सफाईकर्मी तैनात किये जायेंगे। पैकेज-बी में कालभैरव और मंगलनाथ जोन को शामिल किया गया है। मेले के दौरान इन क्षेत्रों में 2000 सफाईकर्मी की तैनाती रहेगी। घाटों तथा घाट क्षेत्र में, विशेषतौर पर सफाई के लिये मेन्युअल के साथ मेकेनिकल व्यवस्था की जायेगी। जेट मशीन का इस्तेमाल घाटों की सफाई के लिये किया जायेगा। क्षिप्रा नदी में बहते कचरे को इकट्ठा करने के लिये नेट का इस्तेमाल भी किया जायेगा। मेला क्षेत्र में सकरे रास्तों पर 45 छोटे वाहन नियमित रूप से कचरा इकट्ठा करेंगे। करीब 20 ट्वीन डंपर प्लेसर ट्रक भी इस्तेमाल होंगे। सफाई कार्य में 10 कामपेक्टर व्हीकल, 8 कैरिंग मूवेबल कामपेक्टर व्हीकल, 40 टीपर वाहन और 40 डम्पर प्लेसर व्हीकल-सह-कंटेनर उपयोग में लाये जायेंगे। सिंहस्थ के दौरान मेला क्षेत्र में करीब 400 किलोमीटर लम्बाई में विभिन्न सड़कों की सफाई रोड स्वीपिंग मशीन द्वारा की जायेगी। इसके लिये 4 मशीन प्रतिदिन काम करेंगी। इन मशीनों की स्पीड 15 किलोमीटर प्रतिघंटा होती है। सिंहस्थ में विभिन्न जोन क्षेत्र में अलग-अलग सड़क पर सफाईकर्मी तैनात रहेंगे। अस्सी फीट सड़क पर प्रत्येक 50 मीटर पर एक सफाईकर्मी, 60 फीट रोड पर प्रत्येक 100 मीटर पर एक सफाईकर्मी तैनात रहेगा।

जनसंपर्क मंत्री श्री शुक्ल टाइगर रिजर्व में शेरनी और शावकों को देख हुए रोमांचित

भोपाल। जनसंपर्क मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने सीधी जिले के संजय टाइगर रिजर्व दुबरी का भ्रमण किया। श्री शुक्ल ने हाथी पर बैठकर टाइगर रिजर्व का भ्रमण किया। इस दौरान बाधिन और उसके चार बच्चों को देखकर वे काफी रोमांचित हुए। उन्होंने शेरनी के बच्चों को अठखेलियाँ करते हुए देखा और स्वयं को काफी रोमांचित महसूस किया। श्री शुक्ल ने कहा कि संजय टाइगर रिजर्व के बारे में लोगों की यह अवधारणा अब झूठी पड़ती जा रही हैं कि यहाँ शेर नहीं दिखते। उन्होंने कहा कि पिछले डेढ़ वर्ष के दौरान नेशनल पार्क में शेरों की संख्या काफी बड़ी है और पर्यटकों को भी शेर दिखने लगे हैं। विन्ध्य क्षेत्र के मुकुंदपुर में व्हाइट टाइगर सफारी की स्थापना के बाद वाइल्ड लाइफ कॉरिडोर विकसित हो रहा है, जो पर्यटक खजुराहो और बनारस आते हैं, अब वे विन्ध्य में आकर एक सप्ताह बितायेंगे। साथ ही व्हाइट टाइगर सफारी और संजय नेशनल पार्क का भ्रमण करेंगे।

विशेष अभियान में बने एक करोड़ 16 लाख जाति प्रमाण-पत्र

भोपाल। राज्य शासन द्वारा स्कूलों में जाति प्रमाण-पत्र बनवाकर देने के विशेष अभियान में अब तक एक करोड़ 16 लाख से अधिक जाति प्रमाण-पत्र दिये गये हैं। जाति प्रमाण-पत्र डिजिटल हस्ताक्षर के साथ डिजिटल रिपॉजिटरी में भी सुरक्षित रखे जा रहे हैं। इससे भविष्य में जब चाहे इनकी इलेक्ट्रॉनिक प्रति ऑनलाइन उपलब्ध हो सकेगी। राज्य सरकार ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ेवर्ग को जाति प्रमाण-पत्र जारी करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए प्रक्रिया को सरल किया। जाति प्रमाण-पत्र जारी करने को लोक सेवा गारंटी अधिनियम में शामिल कर कम्प्यूटराइज्ड तरीके से एस.डी.एम. के डिजिटल हस्ताक्षरित जाति प्रमाण-पत्र ऑनलाइन जारी करने की व्यवस्था की है।

विकास के लिए आवागमन की सुविधा उपलब्ध करवाना आवश्यक

भोपाल। जनसंपर्क मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि आवागमन की सुविधा से वंचित किसी भी क्षेत्र के विकास में आवागमन की सुविधा उपलब्ध करवाना आवश्यक है। राज्य सरकार की प्राथमिकता है कि लोगों को जहाँ हितग्राहीमूलक योजनाओं का लाभ मिले, वहीं आवागमन के साधन भी विकसित हो। इसी उद्देश्य से प्रदेश में आवागमन के साधन बडे पैमाने पर विकसित किये जा रहे है। श्री शुक्ल गुरूवार को सिंगरौली जिले के चाचर ग्राम में 5 करोड़ 74 लाख की लागत से निर्मित पुल के भूमि-पूजन समारोह में बोल रहे थे। मंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि पुल का निर्माण गुणवक्ता के साथ समय सीमा के अंदर पूरा किया जाये। श्री शुक्ल ने कहा कि गाँव में पुल और सड़क बन जाने से क्षेत्र का विकास तीव्र गति से होता है। उन्होने कहा कि क्षेत्र में मुख्य मार्ग से कनेक्टीविटी होने पर उस गाँव का विकास बिना रूकावट के स्वत-ही हो जाता है।

मध्यप्रदेश में खादी की लोकप्रियता बढ़ी

भोपाल। कुटीर एवं ग्रामोद्योग मंत्री सुश्री कुसुम महदेले ने कहा है कि खादी वस्त्रों को लेकर मध्यप्रदेश में परिवर्तन का दौर लगातार जारी है। कबीरा ब्राण्ड के लांच होने के बाद प्रदेश में खादी वस्त्रों की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। सुश्री महदेले गौहर महल में राष्ट्रीय खादी उत्सव का शुभारंभ करने के बाद कार्यक्रम को संबोधित कर रही थीं। कार्यक्रम में खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष श्री सुरेश आर्य और उपाध्यक्ष श्री रघुनंदन शर्मा भी मौजूद थे। सुश्री कुसुम महदेले ने नागरिकों का आव्हान किया कि वे सिर्फ खादी के वस्त्र ही न पहनें, बल्कि उससे जुड़े कारीगरों को रोजगार के अवसर भी मुहैया करवायें। उन्होंने कहा कि खादी वस्त्रों से प्रेम और जुढ़ाव लगातार बने रहना चाहिये। जब तक हम खादी खरीदेंगे नहीं, तब तक खादी को बढ़ावा नहीं मिलेगा। हाथ से बुनने की कला अत्यंत प्राचीन है, जिसे खादी ने अब तक जीवित रखा है। उन्होंने कहा कि खादी उत्सव जैसे आयोजनों से कारीगरों को प्रोत्साहन मिलता है। कार्यक्रम को श्री सुरेश आर्य और श्री रघुनंदन शर्मा ने भी संबोधित किया।

विकास

बाँस क्षेत्र का तेजी से विकास करने की जरूरत - लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती महाजन

मध्यप्रदेश को बैम्बू केपिटल बनाया जायेगा - मुख्यमंत्री श्री चौहान

भोपाल। लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन के मुख्य आतिथ्य में इंदौर में तीन-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय बैम्बू समिट का शुभारंभ हुआ। श्रीमती महाजन ने कहा कि भारत में बाँस क्षेत्र के तेजी से विकास की जरूरत है। भूतल परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि हाईटेक हाइवे विलेज में बाँस उत्पादों के विक्रय के लिये पवेलियन बनेंगे। विशेष अतिथि मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मध्यप्रदेश को बैम्बू केपिटल बनाया जायेगा। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने कहा कि बाँस का उत्पादन गरीबी उन्मूलन में भी कारगर है।

समिट में भारत सहित 11 से अधिक देश के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। 'बैम्बू फॉर सस्टेनेबल डेव्हलपमेंट ग्लोबल को-ऑपरेशन' पर इस समिट में बाँस उत्पादन, कारीगर, उद्यमियों और तकनीकी विशेषज्ञों को विमर्श के लिये मंच उपलब्ध करवाया गया है।

श्रीमती महाजन : श्रीमती सुमित्रा महाजन ने कहा

कि भारत में बाँस क्षेत्र के तेजी से विकास करने की जरूरत है। बाँस उत्पादन तथा बाँस उत्पादों के संबंध में नई नीति और नई तकनीक का विकास भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि देश में बाँस क्रांति पैदा की जा सकती है। बाँस उत्पादन को बढ़ावा देकर भारत की आर्थिक स्थिति को और अधिक मजबूत किया जा सकता है। जिस गति से वर्तमान केन्द्र सरकार द्वारा बाँस के क्षेत्र विस्तार के लिये काम किया जा रहा है, उससे लगता है कि आने वाले समय में भारत की आर्थिक व्यवस्था बाँस आधारित बन सकेगी। उन्होंने कहा कि पर्यावरण सुधार की दृष्टि से भी बाँस के उत्पादन और उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने की जरूरत है।

श्री गडकरी : श्री नितिन गडकरी ने कहा कि

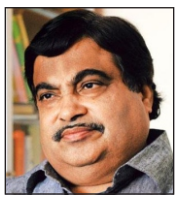

मध्यप्रदेश में बाँस उत्पादन एवं इसके मूल्यवर्धित उत्पादों के क्षेत्र में बेहतर काम किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में गरीबी एवं बेरोजगारी के कारण लोगों का गाँव से शहरों की ओर पलायन भी सबसे बड़ी चिंता का विषय है। खेती के साथ हस्तशिल्प को प्रोत्साहित कर इन समस्याओं से निपटा जा सकता है। बाँस का उत्पादन बढ़ाकर हम देश से गरीबी और बेरोजगारी की समस्या को दूर कर सकते हैं। बाँस का उत्पादन बढ़ाकर बेरोजगारों को रोजगार दिया जा सकता है। उन्होंने विशेषज्ञ संस्थाओं की मदद लेकर बाँस उत्पादों की नई-नई डिजाइन तैयार करने की जरूरत पर जोर दिया। श्री गडकरी ने कहा कि केन्द्र सरकार ने तय किया है कि अब ग्रीन हाईवे बनाये जायेंगे। इसके लिये परियोजना लागत की एक प्रतिशत राशि पौधरोपण और सौंदर्यीकरण के लिये आरक्षित की जायेगी। दस लाख रुपये प्रति एकड़ पौधरोपण के लिये नेशनल हाईवे पर खर्च किये जायेंगे। हाईवे पर बाँस के पौधे प्रमुखता से लगाये जायेंगे। इससे हरियाली के साथ लोगों को रोजगार भी मिलेगा। श्री गडकरी ने घोषणा कि देश में 1200 से अधिक हाईटेक हाईवे विलेज बनाये जा रहे हैं। हर विलेज में 10 हजार वर्गफीट पर बाँस उत्पाद विक्रय के लिये पवेलियन भी बनाये जायेंगे। इसी तरह का पवेलियन फल एवं सब्जी के लिये भी बनाया जायेगा। उन्होंने बाँस का उपयोग बायोफ्यूल के रूप में करने की जरूरत भी बतायी।

मुख्यमंत्री श्री चौहान : मुख्यमंत्री श्री

शिवराजसिंह चौहान ने कहा कि मध्यप्रदेश को देश का बैम्बू केपिटल बनाया जायेगा। बाँस मिशन हमारा लक्ष्य है। इस मिशन से बाँस के वन क्षेत्र का विस्तार किया जायेगा। बाँस की व्यावसायिक खेती भी करवायी जायेगी। बाँस को मध्यप्रदेश में कृषि उत्पाद माना जायेगा। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में बाँस के माध्यम से अधिकतम रोजगार पैदा करने के प्रयास किये जायेंगे। बाँस को कृषकों की आय बढ़ाने का माध्यम भी बनाया जायेगा। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में बाँस की जितनी खपत है, उतना उत्पादन नहीं हो पाता है। बाँस के उत्पादन को बढ़ाने के लिये हमने तय किया है कि वनों के साथ अब किसानों के खेतों की मेड़ों, घरों के आसपास तथा जहाँ खाली जगह है वहाँ बाँस का सघन रोपण करवाया जाये। बाँस उत्पाद बनाने के लिये कारीगरों का कौशल उन्नयन किया जायेगा। बाँस विक्रय केन्द्र बनाये जायेंगे। शोध एवं अनुसंधान किये जायेंगे। स्वच्छता मिशन के टायलेट बनाने में भी बाँस का उपयोग किया जायेगा। उन्होंने कहा कि इस समिट के माध्यम से जो भी निष्कर्ष निकलेंगे उनको संबंधितों तक पहुँचाने के प्रयास किये जायेंगे।

केन्द्रीय कृषि मंत्री : केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने कहा कि बाँस जीवन की अनेक जरूरतों की पूर्ति करता है। बाँस का परम्परागत

उपयोग के साथ, गृह साज-सज्जा, औषधि और भोजन के रूप में भी किया जा रहा है। केन्द्र सरकार द्वारा बाँस क्षेत्र के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। 28 राज्य में बाँस मिशन में कार्य किये जा रहे हैं। यह खुशी की बात है कि मध्यप्रदेश को बाँस मिशन में जो आवंटन प्राप्त हुआ है उसका शत-प्रतिशत उपयोग किया गया है। मध्यप्रदेश प्राप्त आवंटन का शत-प्रतिशत उपयोग करने वाला देश का पहला राज्य है। यह साबित करता है कि बाँस उत्पादन के क्षेत्र में मध्यप्रदेश में कितने प्रभावी कार्य किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि बाँस के पर्यावरणीय और आर्थिक महत्व भी है। हमारे देश के कुल वन क्षेत्र के 13 प्रतिशत क्षेत्र में बाँस वन हैं। भारत में 137 से अधिक प्रजाति के बाँस होते हैं। इसका 1500 से अधिक तरीके से उपयोग होता है। बाँस लकड़ी का विकल्प भी बन सकता है। श्री सिंह ने कहा कि बाँस के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले राज्यों को पुरस्कृत भी किया जायेगा।

सम्पादकीय

क्या मध्य प्रदेश भी शराब मुक्त होगा ?

मोदी जी ने कई वर्षो तक गुजरात मे सरकार चलाई व सभी जानते है गुजरात में कई वर्षो से शराब का कारोबार बंद है। आज जब वह देश के प्रधानमंत्री हैं तो सभी ये उम्मीद रखते हैं की वे पूरे देश मे शराब बंद का नियम लागू करवा देंगे।

बिहार में पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव में राजद-जदयू गठबंधन को मिली भारी जीत का एक बड़ा कारक उसमें प्रचार के दौरान शराबबंदी के वादे को माना गया। अच्छी बात ये है कि जीत के बाद गठबंधन ने इस वादे को याद रखा और अब उस पर अमल की औपचारिक घोषणा के साथ ही बिहार देश का चौथा ऐसा राज्य बन गया है, जहां पूरी तरह शराब पर प्रतिबंध है। हालांकि एक सवाल यह उठाया गया कि इस पहल से राज्य को करीब साढ़े तीन हजार करोड़ रुपए सालाना राजस्व का नुकसान उठाना पड़ेगा और बड़ी तादाद में लोगों के रोजगार छिनेंगे।

लेकिन जो लोग यह सवाल उठा रहे थे, उन्हें भी यह बताना जरूरी नहीं लगा कि इसकी कितनी कीमत समाज के गरीब तबकों को चुकानी पड़ रही है। अच्छा यह है कि नीतीश कुमार अपने फैसले पर अड़िग रहे। बल्कि एक उपाय उन्होंने यह बताया कि जिन लोगों को शराब बेचने का लाइसेंस दिया गया था, वे चाहें तो उसमें दूध सहित सुधा डेयरी के अन्य उत्पाद बेच सकते हैं। जाहिर है, अगर कोई सरकार किसी समस्या से निपटने की इच्छाशक्ति रखती है तो वह विकल्प ढूंढ ही लेती है। फिर भी, शराबबंदी के बाद माफिया का गैरकानूनी कारोबार रोकने के लिए अपने सीमित संसाधनों और संबंधित महकमों में कर्मचारियों की भारी कमी की चुनौती से सरकार कैसे निपटेगी, यह देखने की बात होगी। कुछ राज्यों में शराबबंदी और उसके बाद अलग-अलग कारणों से उसे खत्म करने के भी उदाहरण रहे हैं। लेकिन अगर उनसे सबक लेकर बिहार सरकार अपने कदम बढ़ाती है तो इस अहम पहलकदमी की कामयाबी मुमकिन है। यों जिन हालात और मकसद को ध्यान में रख कर नीतीश कुमार सरकार ने पहल की है, वह अपने आप में किसी भी व्यवस्था की जिम्मेदारी होनी चाहिए। दरअसल, अपने पिछले कार्यकाल में भाजपा के साथ गठबंधन में रहते हुए नीतीश कुमार सरकार ने जिस तरह हर पंचायत में शराब की दुकान खोलने की इजाजत दी थी, उसका घातक असर साफ देखा जा सकता था। किसी भी नशे की आसान उपलब्धता लोगों को उसके सेवन की आदती बना देती है। यह कोई छिपा तथ्य नहीं है कि गरीब तबकों के बीच अगर किसी व्यक्ति को शराब की लत लग जाती है तो उसका पूरा परिवार एक ऐसी त्रासदी का शिकार हो जाता है जिसे टाला जा सकता था। बच्चों का भविष्य खत्म हो जाता है और खासतौर पर महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा, उनका अपमान ही दिनचर्या का हिस्सा हो जाता है। गुजारा चलाने के लिए कमाई गई रकम का ज्यादातर हिस्सा अगर शराब में खप जाता हो तो उस परिवार की आर्थिक दशा का अंदाजा लगाया जा सकता है।

हर साल दर्जनों लोग जहरीली शराब पीने से जान गंवा बैठते हैं। गरीब तबका इस आदत के चलते भी यथास्थिति में बने रहने को मजबूर होता है। पंजाब इसका उदाहरण है कि नशे की लत के सामाजिक असर कितने घातक हो सकते हैं। लेकिन सामाजिक आंदोलनों के दौर में बढ़ती जागरूकता के चलते लोगों और खासकर महिलाओं ने इस त्रासदी और उसकी जड़ों की पहचान की और पिछले कुछ सालों में बिहार के अलग-अलग हिस्सों में बड़े पैमाने पर शराबबंदी के लिए आंदोलन चलाया था। यही वजह है कि शराबबंदी की घोषणा के साथ ही राज्य में बड़े पैमाने पर महिलाओं ने सार्वजनिक रूप से खुशी का इजहार किया है।

मध्य प्रदेश में कुछ समय पूर्व शिवराज सरकार ने घर में 100 बॉटल रखने का लाइसेंस देने की घोषणा की थीं, जो निर्णय जनता के भारी दबाव के चलते वापस ले लिया गया। मध्य प्रदेश की जनता व महिलायें भी चाहती हैं की अन्य 4 राज्यों की तरह शिवराज सरकार भी पूरे प्रदेश में शराब बंद की घोषणा करें।

उम्मीद है हमारे मुख्यमंत्री इस और जल्द ही ध्यान देंगे।

- पराग वराडपांडे

मध्यप्रदेश में महिला उत्थान की सार्थक कोशिशें - माया सिंह

स्त्री जाति को समाज में समानता का दर्जा दिलवाना किसी जंग से कम नहीं है। जब हम अपने सांस्कृतिक, धार्मिक इतिहास पर नजर डालें तो स्त्री का सम्मान देखने को मिलता है। बाद के समय में समय, परिवर्तन काल अन्यान्य कारणों से समाज में स्थिति बदली और नारी के प्रति एक दोयम दर्जे की सोच बन गई। मध्यप्रदेश में इस सोच का बदलने का काम मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की नीतियों, कार्यक्रमों और योजनाओं ने किया। आज हम नारी की स्थिति को लेकर पूरी तरह मुतमईन नहीं हैं लेकिन हाँ मैं यह दावा जरूर कर सकती हूँ कि एक बड़ा बदलाव समाज में आया है और अब प्रदेश में जन्म लेने वाली बेटियों का वर्तमान और भविष्य सुरक्षित हुआ है। कैसे हुआ इस पर हम नजर डालें तो पाएंगे कि अगर दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ सही दिशा में आगे बढ़ा जाए तो परिणाम बेहतर मिलते ही हैं। ऐसा ही मध्यप्रदेश में हुआ है। अब हम फख्र के साथ यह कह सकते हैं कि हमारी स्त्री उन्मुखी योजनाओं को पूरे देश ने स्वीकारा और उन्हें अपनाया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के जहन में कहीं शुरूआती दौर से यह था कि विकास की कल्पना तभी पूरी होगी जब हम आधी आबादी को उसका भागीदार बनायेंगे। उन्हें जब अवसर मिला तो सबसे पहले स्त्री कल्याण का बीड़ा उठाया। पहली महिला पंचायत के जरिए उन्होंने जाना कि आखिर महिलाएँ शासन से क्या अपेक्षा रखती हैं ताकि उसके आधार पर योजनाएँ बने और उसके परिणाम मिलें। अप्रैल 1 वर्ष 2007 में लाड़ली लक्ष्मी योजना शुरू हुई। आज प्रदेश में 21 लाख से अधिक बालिका इस योजना का लाभ उठा रही हैं। बालिका के जन्म लेते ही सरकार ने अपने को जिम्मेदार बनाया और उसके विवाह तक का दायित्व इस योजना के जरिये निभाया। इसमें बालिका के पढ़ने का खर्चा उठाने के साथ ही विवाह के समय एक मुश्त 1 लाख 18 हजार रुपये की राशि दी जाती है। इस योजना से प्रदेश में 'बेटी बोझ हैं ' इस सोच में बदलाव आया साथ उसकी शिक्षा पूरी हो और विवाह 21 वर्ष की आयु में ही हो, यह भी सुनिश्चित हुआ।

इस योजना को अनेक राज्य ने अपने यहाँ लागू किया। बंगलादेश ने इस योजना का अध्ययन किया और उसे स्कॉच प्लेटिनम अवार्ड-2014 से नवाजा गया। स्वागतम लक्ष्मी योजना के जरिए महिलाओं के प्रति सम्मानजनक, सकारात्मक सोच के साथ ही समानता का वातावरण बनाने का प्रयास पूरे प्रदेश में चल रहा है। इसमें बालिका के जन्म पर अस्पताल में ही बच्ची और उसकी माँ का स्वागत किया जाता है। जनवरी 24 वर्ष 2014 से शुरू हुई इस योजना में 15 हजार से अधिक बालिका और महिलाओं का सम्मान किया गया।

लाड़ो अभियान के जरिए प्रदेश में बाल-विवाह रोकने का एक महा-अभियान शुरू हुआ। इसमें जन-प्रतिनिधियों, समाज के प्रबुद्ध वर्ग, बैंड-बाजे वाले, हलवाई, कार्ड छापने वाले, टेंट हाऊस वाले यहाँ तक की घोड़ी वाले को भी सदस्य बनाया गया। इन्हें मिलाकर 4 लाख 82 हजार 232 समूह बनाए गए। इन्हें प्रेरित किया गया वे भी बाल-विवाह को हतोत्साहित करें। इसके लिए पूरे प्रदेश में 38 लाख से अधिक लोगों से संपर्क किया गया। सोलह लाख से अधिक परिवार से घर-घर जाकर भेंट की गई। परिणाम भी आए 78 हजार तय बाल-विवाह पर रोक लगी। ऐसे 3332 बाल-विवाह-विवाह स्थल पर ही रोके गए और जो लोग नहीं माने ऐसे 163 प्रकरण थाने में दर्ज करवाए गए। ईमानदारी से किये गये इन प्रयासों से मिले बेहतर परिणामों को राष्ट्रीय सम्मान मिला। वर्ष 2014 में लाड़ो अभियान को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री लोक सेवा उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया।

(Wanted Dealer for Bhopal - Product Apna GPS System)
SAAP SOLUTION
Explore New Digital World
All Types of Website Designing
- Business Promotion, - Lease Website
- Industrial Product Promotion through industrialproduct.in
- Get 2GB corporate mail account @ Rs 1500/- Per Annum per mail account with advance sharing feature
Logo Designing by Experts
Bulk SMS Services
For more details visit our website saapsolution.com
For enquires contact on 9425313619,
Email: info@saapsolution.com

इंटीरियर डिजाइनर बनने के लिए जरूरी है ये स्किल्स

आधुनिक होते समाज में इंटीरियर डिजाइनर्स की मांग काफी बढ़ गई है। इसमें कोई शक नहीं कि अब लोगों की व्यवस्थित, सुंदर और सुरुचिपूर्ण ढंग से रहने की आदतें बड़ीं हैं। कम स्थान में कैसे सुविधापूर्वक रहा जाए, इसकी जरूरत भी पहले से बड़ गई है। इस मामले में लोगों को इंटीरियर डिजाइनर के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। इंटीरियर डिजाइनर आवास के अलावा ऑफिस, दुकान तथा अन्य प्रकार के भवनों की भी साज-सज्जा करते हैं। साज-सज्जा का कार्य पर्यावरण, मनोविज्ञान, वास्तुकला और प्रोडक्ट डिजाईन से गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसकी रुचि, चीजों को व्यवस्थित करने, नया लुक प्रदान करने और रचनात्मक कार्य करने में है, उनके लिए इंटीरियर डिजाइनिंग एक करियर के रूप में बहुत ही लाभदायक हो सकता है। यह इस समय तेजी से उभरता हुआ क्षेत्र है और इसमें रोजगार की भी अच्छी सम्भावना है।

वर्क प्रोफाइल : इंटीरियर डिजाइनर का काम क्रिएटिव होता है। उसका मुख्य काम है क्लाइंट की इच्छा तथा बजट के अनुसार घर को सुंदर रूप देना। पहले इंटीरियर डिजाइनर घर की बनावट के आधार पर कम्प्यूटर की सहायता से मैप तैयार करता है। अगर वह क्लाइंट को पसंद आ गया और उसकी सहमति मिल जाती है, तो वह उसी के अनुरूप घर को अंतिम रूप दे देता है।

शैक्षणिक योग्यता : इंटीरियर डिजाइनिंग के कोर्स में प्रवेश पाने के लिए 12वीं में गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा इंग्लिश में कम से कम में 55 प्रतिशत अंक जरूरी हैं।

पर्सनल स्किल्स : इंटीरियर डिजाइनिंग के क्षेत्र में सफलता क्लाइंट की अधिकतम संतुष्टि पर निर्भर करती है। इंटीरियर डिजाइनर में सिर्फ क्रिएटिव ही नहीं, टेक्निकल गुण होना भी बहुत जरूरी है। घर की सज्जा को अंतिम रूप देने तक की प्रक्रिया में डिजाइनर को कई लोगों से मिलना पड़ता है और बात भी करनी पड़ती है। ऐसी स्थिति में प्रभावशाली ढंग से बातचीत करने की क्षमता का होना जरूरी है। इंटीरियर डिजाइनर के विचारों पर अंतिम मुहर क्लाइंट के द्वारा ही लगती है, इसलिए यह भी जरूरी है कि क्लाइंट इंटीरियर डिजाइनर की बात को बिना किसी परेशानी के समझ सके। और इसके लिए एक डिजाइनर में तकनीकी भाषा को आम भाषा में परिवर्तित करने का गुण भी होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, इंटीरियर डिजाइनर को धैर्यवान तथा मृदुभाषी भी होना चाहिए।

रोजगार अवसर : पिछले कुछ समय से घर के प्रति जागरूकता ने इंटीरियर डिजाइनिंग के क्षेत्र में अनेक विकल्पों को जन्म दिया है। इस क्षेत्र में नौकरी की अपार संभावनाएं पैदा हुई हैं। एक इंटीरियर डिजाइनर के रूप में किसी बड़ी कंपनी के लिए काम करने के अलावा स्वयं भी कोई कंपनी स्थापित करने का विकल्प उपलब्ध है। प्रोफेशनल्स किसी प्राइवेट डिजाइन फर्म या थियेटर में भी काम कर सकते हैं। पब्लिक सेक्टर में भी इंटीरियर डिजाइनरों की काफी मांग है। पब्लिक इंस्टीट्यूशंस जैसे टाउन प्लानिंग ब्यूरो, मेट्रोपोलिटन और क्षेत्रीय विकास डिपार्टमेंट में इंटीरियर डिजाइनर्स की आवश्यकता है तथा भविष्य में भी इनकी मांग बनी रहेगी। जो व्यक्ति पार्ट-टाइम जॉब करना चाहते हैं तथा अपना खुद का बिजनेस करना चाहते हैं, वे भी थोड़ा-सा पैसा लगाकर इस क्षेत्र में करियर तलाश सकते हैं।

जानिए डिजास्टर मैनेजमेंट में भविष्य की संभावनाएं

हर साल दुनिया के किसी-न-किसी देश में भूकंप, बाढ़ या सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाएं लोगों के जीवन को प्रभावित करती रहती हैं। यूएन द्वारा जारी किए गए कुछ आंकड़ों के अनुसार, पिछले 20 वर्षों में करीब 30 लाख लोग प्राकृतिक आपदाओं के शिकार हुए। जबकि सही समय पर प्रोफेशनल्स की मदद से 10 लाख लोगों को सुरक्षित निकाला गया। इन आंकड़ों से साफ है कि डिजास्टर मैनेजमेंट समय की मांग तो है ही, एक ऐसा करियर ऑप्शन भी है जो अच्छे पे पैकेज के साथ जॉब सेटिस्फैक्शन भी देता है। अगर आपको सेवा के क्षेत्र से जुड़कर काम करने में दिलचस्पी है, तो आप इसमें करियर बना सकते हैं।

क्या है डिजास्टर मैनेजमेंट ? : डिजास्टर मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स का काम आपदा के शिकार लोगों की जान बचाना और उन्हें नई जिंदगी देना है। आपात स्थिति के समय बिगड़ी हुई जिंदगी को पटरी पर लाने का काम इन्हीं के जिम्मे होता है। इन प्रोफेशनल्स को आपदा पीड़ितों को तुरंत बचाने, राहत पहुंचाने और उनकी जरूरतें पूरी करने की ट्रेनिंग भी दी जाती है। साथ ही, इन्हें घायलों का प्राथमिक उपचार भी करना होता है।

जरूरी कोर्सेज : डिजास्टर मैनेजमेंट से जुड़े सर्टिफिकेट से लेकर पीजी डिप्लोमा स्तर के कोर्सेज अलग-अलग यूनिवर्सिटीज और इंस्टीट्यूट्स में कराए जाते हैं। इनमें से कुछ कोर्सेज में इंटर के बाद ही एडमिशन लिया जा सकता है, जबकि कुछ कोर्सेज के लिए ग्रेजुएट होना जरूरी है। आप सर्टिफिकेट कोर्स इन डिजास्टर मैनेजमेंट, डिप्लोमा इन डिजास्टर मैनेजमेंट, एमए इन डिजास्टर मैनेजमेंट, एमबीए इन डिजास्टर मैनेजमेंट और पीजी डिप्लोमा इन डिजास्टर मैनेजमेंट कर सकते हैं।

कौन-सी स्किल्स ? : चूंकि यह चुनौती और खतरों से भरा हुआ काम है, इसलिए इसमें प्रेजेंस ऑफ माइंड और बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती है। इसके अलावा आपका शारीरिक व मानसिक तौर पर तगड़ा होना भी जरूरी है। ऐसे प्रोफेशनल्स को किसी भी समय अचानक किसी आपदा के दौरान काम करना पड़ता है, इसलिए आपके अंदर धैर्य के साथ हमेशा काम करने का जज्बा होना चाहिए। इसके अलावा कम समय में सही निर्णय लेना भी एक महत्वपूर्ण गुण है।

भविष्य की संभावनाएं : इस फील्ड में ज्यादातर जॉब्स गवर्नमेंट सेक्टर में ही हैं, इस लिहाज से यह एक बेहतर करियर ऑप्शन है।

"SWATI TUTION Classes"
Don't waste time
Rush Immediately for Coming Session 2016-2017
Personalized Tutions up to 7th Class for All Subjects
Special Classes for Sanskrit
CONTACT : SWATI TUTION CLASSES
SAGAR PREMIUM TOWER, D-BLOCK, FLAT.NO.007
MOBILE-9425313620, 9425313619

एक दिन में कितनी बार धोना चाहिए चेहरा?

त्वचा से जुड़ी छोटी से छोटी बात के लिए विशेषज्ञ नियमों का पालन करने की सलाह देते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर नियम से चलें तो आप बिना पार्लर जाए भी निखरी और बेदाग त्वचा पा सकती हैं।

त्वचा की देखभाल में आपका खानपान भी शामिल है। अच्छे खानपान का असर चेहरे पर भी पड़ता है. रोज की डाइट में जूस, ज्यादा से ज्यादा पानी और फाइबरयुक्त चीजें लेने से त्वचा को भी पोषण मिलता है। खानपान और देखभाल के साथ ही एक और कारक है जो त्वचा को सीधे तौर पर प्रभावित करता है।

आप एक दिन में कितनी बार अपना चेहरा धो रही हैं, इससे भी आपकी त्वचा प्रभावित होती है। अगर आपकी स्किन ऑयली है और आप दिन में दो बार चेहरा धोती हैं तो आपकी स्किन निखरी और बेदाग बनी रहेगी। वहीं अगर आपकी स्किन ड्राई है तो आपके लिए एकबार भी चेहरा धोना पर्याप्त है।

आमतौर पर ऐसी धारणा है कि दिन में ज्यादा से ज्यादा बार चेहरा धोना फायदेमंद होता है लेकिन आपको ये जानकर आश्चर्य होगा कि ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। खासतौर पर उन लोगों के लिए जिनकी त्वचा ड्राई है। अगर आपकी स्किन ऑयली है तो भी तीन बार से अधिक चेहरा धोना नुकसानदेह हो सकता है।

अगर आपके चेहरे पर बहुत मुंहासे हैं तो उन्हें आप समय-समय पर साफ कर सकती हैं। अब तो आप ये समझ गई होंगी कि चेहरा धोने के भी कुछ खास नियम होते हैं। गर्मियां आ गई हैं और अब त्वचा को खास देखभाल की जरूरत होती है। ऐसे में ये जानना बहुत जरूरी हो जाता है कि कब चेहरा धोएं और कैसे धोएं?

1. सुबह के समय चेहरा धोते समय

सुबह के समय जब आप बिस्तर से उठती हैं तो सबसे पहले अपने दांत साफ करें और अपने चेहरे को पानी से धोएं। आप चाहें तो कोई भी माइल्ड फेसवॉश से चेहरा धो सकती हैं। सुबह के समय चेहरा धोना बहुत जरूरी है। सुबह के समय चेहरा धोने से पोर्स साफ हो जाएंगे और आप फ्रेश महसूस करेंगी।

2. दोपहर के समय चेहरा धोते समय

अगर आपकी स्किन ऑयली है तो बेहतर होगा कि आप अपने डॉक्टर से ये पूछ लें कि आपकी त्वचा के लिए कौन सा साबुन या फेसवॉश अच्छा रहेगा. आप चाहें तो ठंडे साफ पानी से भी चेहरा साफ कर सकती हैं। दोपहर के समय ठंडे पानी से चेहरा धोने पर आप फ्रेश तो महसूस करेंगी ही साथ ही इससे आपके चेहरे पर मौजूद एक्स्ट्रा ऑयल भी निकल जाएगा।

3. शाम के समय चेहरा धोते समय

काम के बाद घर लौटने पर चेहरा धोना बहुत जरूरी है। अगर घर लौटकर नहाना आपकी आदत में शुमार है तो नहाने के दौरान ही चेहरा भी साफ कर लें। वरना सिर्फ चेहरे को भी अच्छी तरह से साफ करें। इससे आपकी दिनभर की थकान दूर हो जाएगी और चेहरे की सारी गंदगी भी साफ हो जाएगी। आप चाहें तो इसके बाद हर्बल पैक का भी इस्तेमाल कर सकती हैं। गर्मियों में हर्बल पैक इस्तेमाल करना अच्छा रहेगा।

निखरी-बेदाग त्वचा के लिए अपनाएं ये आसान **उपायः**

- चेहरा साफ करने के लिए हर बार फेसवॉश का इस्तेमाल करना सही नहीं है। फेसवॉश में मौजूद रसायनिक तत्व आपकी त्वचा की कोमलता छीन सकते हैं. इससे त्वचा का नेचुरल ग्लो भी जा सकता है।
- अगर आपकी स्किन बहुत ऑयली है तो हर बार फेसवॉश का इस्तेमाल करने से बेहतर है कि आप टोनर का इस्तेमाल करें। इससे भी कहीं बेहतर रहेगा कि आप सिर्फ पानी से ही चेहरा धोएं।
- अगर आपकी स्किन बहुत संवेदनशील है तो गुनगुने पानी का इस्तेमाल करना बेहतर रहेगा. आप चाहें तो किसी अच्छे बेबी सोप का भी इस्तेमाल कर सकती हैं।
- बहुत देर तक चेहरा न धोएं. इससे चेहरे का नुकसान पहुंच सकता है।

जूस पीने से बेहतर है आप पानी ही पिएं

सेहत की बात होती है तो ज्यादातर लोग जूस पीने की सलाह देते हैं पर हम आपसे ये नहीं कहेंगे. हमारी तो आपको यही सलाह है कि आप जूस की जगह पानी ही पिएं।

आप सोच रहे होंगे कि जूस पीना तो एक अच्छी आदत है फिर हमारे ऐसा कहने के पीछे क्या वजह हो सकती है। जूस पीना एक अच्छी आदत है पर क्या आपने कभी ये सोचा है कि जूस पीने के साथ ही आप कितनी अधिक मात्रा में शुगर लेते हैं?

विशेषज्ञों की मानें तो जूस पीने से कहीं बेहतर है कि आप पानी पिएं। लेकिन अगर आप लंबे समय से जूस पी रहे हैं तो जूस पीना छोड़ने से पहले अपनी डाइट को संतुलित कर लें। अपनी डाइट में सलाद को शामिल करें। कोशिश करें कि आपकी डाइट खनिज लवणों, विटामिन, प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट से भरपूर हो।

पानी पीने से शरीर के विषाक्त पदार्थ भी आसानी से बाहर निकल जाते हैं।

आखिर क्यों दी जाती है जूस कम करके अधिक पानी पीने की सलाह?

1. पानी में कैलोरी नहीं होती. ऐसे में आपको वजन को लेकर परेशान होने की जरूरत नहीं होती. जबकि जूस में भरपूर मात्रा में कैलोरी होती है. आप चाहें तो फ्रूट जूस पी सकते हैं लेकिन अगर उसमें सिर्फ नेचुरल शुगर हो तो.
2. शरीर की आवश्यक नमी बनी रहती है.
3. पानी पीते रहने से शरीर के भीतर मौजूद कई तरह के विषाक्त पदार्थ यूरीन के माध्यम से बाहर निकल जाते हैं.
4. पानी पीने के लिए आपको किसी तरह की तैयारी करने की जरूरत नहीं होती. साथ ही ये सभी के बजट में भी है.

तरबूज के रस में काली मिर्च मिला कर पीने के फायदें

गर्मी के इस मौसम में खानपान का बहुत ध्यान रखना पड़ता है। इस मौसम डॉक्टर भी ज्यादा पानी पीने और रसीले फल खाने की सलाह देते हैं। तरबूज और इसका जूस पीने से गर्मी के मौसम में शरीर में पानी की कमी नहीं होती है और शरीर को ठंडक भी प्रदान करता है।

हेल्थ एक्सपर्ट की मानें तो गर्मियों के मौसम में हर व्यक्ति को कम से कम दो ग्लास तरबूज का जूस जरूर पीना चाहिए। किडनी की समस्या है वो तरबूज का जूस अवश्य पिएं। खाली पेट तरबूज का जूस पीने से शरीर के विषैले पदार्थ भी बाहर निकल जाते हैं। लेकिन क्या आपको मालूम है कि तरबूज के जूस में काली मिर्च का पाउडर मिला कर पीने से इसके फायदे दोगुना काम करने लगते हैं। आइए जानें, तरबूज के जूस में काली मिर्च का पाउडर मिलाकर पीने से और क्या-

क्या स्वास्थ्य लाभ होते हैं...

1. अगर आप अपने वजन को नियंत्रित करना चाहते हैं तो तरबूज का जूस अवश्य पिएं। इससे शरीर में कमजोरी नहीं आएगी और एक्ट्रा फैट भी कम हो जाएगा।
2. तरबूज के जूस को पीने से कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित रहता है और एचडीएल संतुलित रहता है। साथ ही स्वास्थ्य के लिए भी यह फायदेमंद होता है।
3. तरबूज का जूस पीने से गर्मियों में जिन रोगों के होने की संभावना होती है वो नहीं होते हैं। लू आदि भी नहीं लगती है।
4. तरबूज के जूस और काली मिर्च पाउडर को मिलाकर पीने से कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने में मदद मिलती है। चूंकि तरबूज में लाइसोपिनि नामक एंटीऑक्सीडेंट होता है जो शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है।
5. तरबूज में उच्च मात्रा में फोलेट होता है जो शरीर में रक्त संचार को उचित बनाएं रखता है जिससे अटैक पड़ने की संभावना कम हो जाती है।
6. तरबूज के जूस को पीने से शरीर में पानी की कमी भी दूर हो जाती है। महिलाओं को विशेष रूप से मासिक धर्म के दौरान जूस को काली मिर्च पाउडर के साथ अवश्य पीना चाहिए
7. कई लोगों को लगता है कि अस्थमा में तरबूज का ठंडा जूस नुकसान पहुंचा सकता है लेकिन ऐसा नहीं है। बल्कि इसे काली मिर्च पाउडर के साथ पीने से फायदा मिलता है।

जानिए क्या है वास्तु शास्त्र में नवरात्र पूजन का महत्व

मां दुर्गा के नौ रूप नौ ग्रहों से जुड़े हैं और इस तरह हर ग्रह माता के किसी न किसी रूप का प्रतिनिधि ग्रह है। इन ग्रहों की शांति के लिए मां दुर्गा के विभिन्न रूपों का पूजन विशेष फलदाई होता है। नवरात्र यानी मां दुर्गा के नौ रूपों की आराधना। नवरात्र में हम मां दुर्गा के नौ रूपों की ही आराधना नहीं करते, बल्कि नारी शक्ति के उन विभिन्न् रूपों को नमन करते हैं, जो सृष्टि के आदि समय से इस संसार का संचालन कर रहे हैं।

सिंह पर सवार मां दुर्गा अपनी अष्ट भुजाओं में शंख, चक्र, गदा, धनुष, तलवार, त्रिशूल और कमल धारण किए हुए भक्तों को भय मुक्त करती हुई और दुष्टों का दमन करती हुई नजर आती हैं। मां दुर्गा के इस रूप में दया, क्षमा, शांति, कांति, श्रद्धा, भक्ति, ममता, सहनशीलता, करुणा और अन्नपूर्णा भी दिखायी देती हैं। यही सारे गुण भारतीय नारी के भी आभूषण हैं। नवरात्र नारी के इसी शक्ति रूप को नमन करने का महापर्व है। वास्तुशास्त्र में भी नवरात्र पूजा की महिमा का वर्णन किया गया है। अगर नवरात्र पूजा विधिवत की जाए तो वास्तु के कई दोषों की शांति होती है। वास्तुशास्त्र के अनुसार माता दुर्गा के नौ रूप नौ ग्रहों से संबंध रखते हैं।

आशय यह कि प्रत्येक ग्रह माता के किसी न किसी रूप का प्रतिनिधि ग्रह है और प्रत्येक ग्रह का संबंध किसी दिशा विशेष से है। वास्तुशास्त्र दिशाओं के ज्ञान और उनके शुभ-अशुभ प्रभावों पर विस्तृत व्याख्या करता है।

उल्लेखनीय है कि नवदुर्गा के इन रूपों की विधिवत आराधना न सिर्फ माता के उस रूप के प्रतिनिधि ग्रह की शांति करती है बल्कि घर में अगर उस ग्रह से संबंधित दिशा में कोई वास्तु दोष है तो इस आराधना से उस दोष की भी काफी हद तक शांति होती है।

वास्तुशास्त्र में ईशान यानी उत्तर-पूर्व को पूजा स्थल के लिए सर्वोत्तम स्थान बताया गया है। आप नि:संकोच इस दिशा में पूजा स्थल या नवरात्र के लिए कलश स्थापना कर सकते हैं। लेकिन पूजा के उत्तम फल और वास्तुशांति के लिए (जैसा कि हमने ऊपर तालिका में वर्णित किया है) देवी-देवता से संबंधित दिशा में ही पूजा या कर्मकांड किया जाए तो वह पूजा अधिक फलदाई होती है।

जिस प्रकार हम दीपावली पर लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति की स्थापना करते हैं, उसी प्रकार नवरात्र में भी मां दुर्गा की मूर्ति स्थापना की जा सकती है, लेकिन मूर्ति सवा पांच इंच से बड़ी न हो। ऐसे भी बहुत से लोग होते हैं, जो घर में पूजा-स्थल नहीं बनाते या नहीं बना पाते, ऐसे लोग भी अगर नवरात्र के नौ दिनों में ईशान में पूजा-स्थल बनाकर माता दुर्गा के नौ रूपों की आराधना करते हैं, तो उनका पूजन फलदाई होता है। बहुत से नि:संतान दंपती माता वैष्णो देवी यात्रा संतान प्राप्ति की आशा से जाते हैं, तो कुछ घर की सुख-शांति और समृद्धि के लिए यात्रा करते हैं। किंतु आप अगर किसी कारणवश अपनी इन कामनाओं की पूर्ति के लिए यात्रा नहीं कर पा रहे हैं, तो नवरात्र पर की गई विधिवत पूजा भी आपको ऐसी यात्रा का फल प्रदान कर सकती है।

हनुमान जी जैसा जीवन चाहते हैं तो करें खास काम और दान

हम जो कमाते हैं उसमें बहुत से लोगों का हाथ होता है। उस कमाई में जिसका जो-जो हिस्सा होता है, वो हमें दे देना चाहिये नहीं तो प्रकृति दूसरे तरीकों से, उसे हमसे छीन कर दे देती है। जैसे, माता-पिता ने हमें पढ़ाया-लिखाया, बड़ा किया। आज हम जो कमा रहे हैं, कमाने लायक हुए हैं, उसमें उनका हिस्सा है। हमारे पड़ोसी, हमारे मित्र, रिश्तेदार, इत्यादि चाहे वे आज दुनियां में हैं अथवा नहीं हैं, ऐसे बहुत से लोगों का हिस्सा है, उस धन की कमाई में जो हम आज कर रहे हैं इसलिये सब का हिस्सा देना चाहिये। सनातन धर्म में इसलिए यह विधान दिया गया की आपके घर में किसी भी प्रकार का अनुष्ठान हो उसमें अपने मित्रों को, रिश्तेदारों को, पड़ोसियों को बुलाना चाहिये। भोजन-प्रसाद के लंगर लगाने चाहियें। इसका कारण यह है की आप जिन-जिन के ऋणी हैं, उनके ऋण से अऋण हो जायें अथवा आप को मौका मिलेगा की आप पुण्य कमायें।

दान विभिन्न प्रकार के हैं जैसे भोजन दान। आप किसी को भोजन करवाएं तो वो आपका दिल से शुक्रगुजार होगा। दिल से आपका धन्यवाद देगा। किन्तु जब छह-सात घंटे बाद उसको दोबारा भूख लगेगी तो फिर वो हाथ पसारेगा। आपके आगे नहीं पसारेगा तो कहीं और पसारेगा। अगर किसी को पढ़ाया जाये नि:स्वार्थ भाव से स्कूल/कालेज में पढ़ाया जाये अथवा स्कूल-कालेज ही खोल दिये जायें जहां पर मुफ्त शिक्षा दी जाती हो, तो इसकी महिमा और भी ज्यादा है क्योंकि अगर एक व्यक्ति समर्थ हो गया अपने पैरों पर खड़ा हो गया धन कमाने के लिये तो वो किसी के आगे हाथ नहीं पसारेगा बल्कि कई हाथ पसारने वालों की सहायता कर सकता है इसलिए कई बार अन्न दान से शिक्षा दान की महिमा को ज्यादा बखान किया जाता है। औषधि दान की अपनी महिमा है। अब कोई बिमार ही हो गया तो पढ़ाई क्या करेगा? इसलिये औषधि दान की अपनी महिमा है। इस प्रकार बहुत से दान हैं। अन्न दान, वस्त्र दान, शिक्षा दान, भुमि दान, कन्या दान, इत्यादि। दुनियां में प्रचलित सभी दानों में सर्वश्रेष्ठ दान है 'अभय दान'।

अगर किसी को पढ़ाया जाये नि:स्वार्थ भाव से स्कूल/कालेज में पढ़ाया जाये अथवा स्कूल-कालेज ही खोल दिये जायें जहां पर मुफ्त शिक्षा दी जाती हो, तो इसकी महिमा और भी ज्यादा है क्योंकि अगर एक व्यक्ति समर्थ हो गया अपने पैरों पर खड़ा हो गया धन कमाने के लिये तो वो किसी के आगे हाथ नहीं पसारेगा बल्कि कई हाथ पसारने वालों की सहायता कर सकता है

अर्थात् व्यक्ति की सहायता करके उसे ऐसी स्थिति पर पहुंचा देना, जहां पर उसे कोई डर न हो, किसी भी प्रकार का अभाव न हो। यह स्थिति तब आती है जब किसी का भगवान के श्रीचरणों में अनुराग हो जाये। किसी की आत्म-वृत्ति जागृत हो जाये तो यहां पर भी सुखी है और वहां पर भी। ऐसा व्यक्ति जब दुनियाँ से कूच करता है तो परलोक में भी भगवान की सेवा में नियोजित रहता है, आनन्द में रहता है।

जैसे श्री हनुमान जी वे हर समय भगवान श्रीराम की सेवा में रहते हैं। उनको कोई अभाव नहीं, किसी प्रकार का उन पर कोई प्रभाव नहीं बल्कि उनका स्मरण करने से दूसरों के सारे प्रभाव-अभाव चले जाते हैं। तो, किसी को भगवान का भक्त बनाना, किसी को भगवान का भक्त बनने में सहायता करना, इसके लिये कोशिश करना ही सभी दानों से श्रेष्ठ दान है। आज विश्व में जो श्रीहरिनाम संकीर्तन चल रहा है, उसके मूल में हैं जगद्गुरु श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वाती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपादजी। वे कहा करते थे जीव की बहिर्मुख रुचि को बदलना ही सर्वपेक्षा, जो द्यालु व्यक्ति हैं उनका एकमात्र कर्तव्य है। माया के जाल से एक जीव की भी रक्षा कर सको तो अनन्त कोटि अस्पताल बनाने की अपेक्षा अनन्त कोटि परोपकार का कार्य होगा क्योंकि जिसको भी आप भोजन दान या भुमि दान या वस्त्र दान या कन्या दान कर रहे हैं, उससे वो 84 लाख योनियों के चक्कर से मुक्त नहीं हो रहा है। यदि एक बार कोई अभय दान को प्राप्त कर ले तो वो दुनियां के सारे चक्करों से मुक्त हो कर भगवद् धाम में चला जायेगा। उसका दु:खों का, जन्म-मृत्यु का चक्कर हमेशा-हमेशा के लिये समाप्त हो जायेगा। तो अभय दान करना, किसी की भगवद् भक्ति में सहायता करना, किसी को भगवान की ओर लेकर आना सर्वश्रेष्ठ दान है। कोई व्यक्ति अभय दान के साथ-साथ भोजन दान, वस्त्र दान, औषधि दान, कन्या दान, इत्यादि भी करे तो सोने पर सुहागा ही होगा।

सोशल मीडिया पर असत्य और भ्रामक संदेश डालने पर होगी कड़ी कार्रवाई

सिंहस्थ-2016

उज्जैन। कलेक्टर श्री कवीन्द्र कियावत ने कहा है कि सोशल मीडिया पर असत्य एवं भ्रामक संदेश डालने वालों पर आई.टी. एक्ट की धाराओं में कड़ी कार्रवाई की जायेगी। इस संबंध में उन्होंने आदेश भी जारी किये हैं। उन्होंने चेतावनी दी है कि कोई भी व्यक्ति व्हाट्स-अप, फेसबुक, ट्वीटर इंस्टाग्राम आदि सोशल मीडिया पर अनाधिकृत, असत्य, भ्रामक अथवा लोक शांति को भंग करने वाला कोई भी संदेश प्रसारित न करें। यदि किसी व्यक्ति के पास इस तरह का कोई संदेश आता है, तो उसे दूसरे व्यक्ति को फारवर्ड न करें। अन्यथा दोषी व्यक्ति के विरुद्ध कानूनी प्रावधान के अंतर्गत सख्त कार्रवाई की जायेगी।

पिछले दिनों जिला प्रशासन के ध्यान में एक भ्रामक संदेश सोशल मीडिया के जरिये जारी किये जाने का प्रकरण सामने आया था। संदेश में सिंहस्थ के दौरान उज्जैन आने वाले यात्रियों को अपने पास परिचय-पत्र रखने की अनिवार्यता बतायी गयी थी। जिला प्रशासन ने इस संदेश के बाद स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि इस तरह का कोई आदेश जारी नहीं किया गया है। जिन व्यक्तियों ने यह संदेश व्हाट्स-अप पर प्रसारित किया था, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जा रही है।

उज्जैन में 22 अप्रैल से 21 मई तक होने वाले सिंहस्थ के दौरान मीडियाकर्मियों की सुविधा के लिये दत्त अखाड़ा जोन में अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस मीडिया-सेंटर बनाया गया है। मीडिया-सेंटर 10 हजार वर्गफीट क्षेत्र में बनाया गया है। सेंटर में 306 मीडियाकर्मियों के बैठने की व्यवस्था के लिये एयर-कण्डीशनर हॉल तैयार किया गया है। मीडिया-सेंटर में प्रतिदिन प्रेस ब्रीफिंग होगी। मीडिया-सेंटर में वाई-फाई की सुविधा के साथ 40 सीटर कम्प्यूटर सुविधा भी होगी। इसके जरिये संवाददाता अपने संस्थानों को समाचार भेज सकेंगे। सिंहस्थ में सेवा देने के लिये कई कम्पनी एवं स्वयंसेवी संगठनों ने प्रस्ताव दिये हैं। प्रसिद्ध चाय कम्पनी गुडरिक ने मीडिया-सेंटरों पर दिन में दो बार निःशुल्क चाय और दूध उपलब्ध करवाये जाने के प्रस्ताव दिये हैं। इस सेवा के लिये कम्पनी का सर्विस स्टॉफ उपलब्ध रहेगा। कम्पनी ने पेयजल सुविधा में भी सहयोग का प्रस्ताव दिया है।

की एंड का: कुछ हट के

आर बाल्की की फिल्म 'की एंड का' नए विचार पर आधारित है जिसमें में स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं को पलट दिया गया है।

फिल्म का नायक कबीर (अर्जुन कपूर) अपनी मां की तरह बन कर गृहस्थी का भार उठाना चाहता है। दूसरी ओर नायिका किया (करीना कपूर) महत्वाकांक्षी महिला है और पैसा कमाती है। दोनों में प्रेम विवाह होता है। ध्यातव्य है की प्रत्येक हिन्दी फिल्म की रिलीज के पहले उसके कुछ हट के होने के वादे किये जाते है जो होता नहीं है लेकिन ये फिल्म एक ताजी हवा के झरोखे की तरह है जो वाकई हट के है।

वर्षों से परंपरा चली आ रही है कि पुरुष बाहर के काम संभाले और स्त्री घर के। परिवर्तन ये हुआ है कि कुछ स्त्रियां भी बाहरी जवाबदारी निभाने लगी हैं और उन्हें घर तथा बाहर की दोहरी भूमिका निभानी पड़ती हैं, लेकिन पुरुष ने कभी घर का जिम्मा नहीं संभाला यदि कोई पुरुष ऐसा करता है भी है तो उसे ताना दिया जाता है कि वह पत्नी के कमाए टुकड़ों पर पलता है।

दरअसल हाउसवाइफ की कोई कीमत ही नहीं है क्योंकि वह पैसा नहीं कमाती है जबकि उसका काम भी कम जवाबदारी वाला नहीं रहता है और उसके हर रोज के बलिदान ही सफल व्यक्ति की ताकत बनते है। घरेलू महिला की तुलना किसी से भी नहीं हो सकती क्योंकि वो एक सुदृढ़ घर की नींव रखती है जिससे समाज भी मजबूत होता है।

अर्जुन कपूर 'इश्कजादे' के बाद फिर से अपने अभिनय का प्रभाव छोड़ने में कामयाब रहे हे और करीना ने भी हमेशा की तरह कोई कसर नहीं छोड़ी। स्वरूप संपत लंबे अर्से बाद दिखी है और उनसे आगे भी उम्मीदे होगी। फिल्म का संगीत भी लोकप्रिय हो चुका है और ये एक अच्छी मनोरंजक फिल्म है। मै इस फिल्म को 5 में से 3 स्टार दूँगा।

★★★ *अजय सिसोदिया*

आयुष समाधान
आयुर्वेद व होमियोपैथी
डॉक्टरों द्वारा घर बैठे पायें उचित परामर्श व दवाईयां
बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं
जल ही जीवन है जल बचायें
पेड़ पौधे करो न नष्ट सांस लेने में होगा कष्ट
www.ayushsamadhaan.com
FOR MORE DETAILS & BENIFITS VISIT OUR WEBSITE FOR REGISTRATION

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : पराग वराडपांडे द्वारा दिशागोचर पब्लिकेशन 26 बी, प्रेस काम्पलेक्स एम.पी. नगर, जोन-1 से मुद्रित कराकर, प्लाट नं. -12, सेक्टर-ए, परस्पर सोसायटी चूनाभट्टी, कोलार रोड, भोपाल से प्रकाशित। सम्पादक: पराग वराडपांडे, मो. 9826051505,आर.एन.आई. नं. MPHIN/2015/66655, editor@trikaldrishti.com (विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।)